REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 5 | FEBRUARY - 2019

उत्तर बिहार में ब्रिटिश काल में सेकेन्डरी एजुकेशन का विकास

डॉ. पंकज कुमार
एम० ए०, बी० एड०, पी–एच० डी०

भूमिकाः–

बुडस डिस्पैच की (1954) की अनुशंसाओं को लागू करते हुए ब्रिटिश राज को अभूतपूर्व विद्रोहों का सामना करना पड़ा। सन 1851 के विद्रोह को संथाल विद्रोह से अलग करके यही देखा जा सकता है। बल्कि यह विल्लव संथाल विद्रोह का ही जारी रूप था। काल तथा सीले परंतु संवेदनशील संथाल अंग्रेजों की दमनकारी नीतियों को बर्दास्त नहीं कर सके। अंग्रेजी की दमनकारी नीतियों को सेठ साहूकार भी समर्थन दे रहे थे। यह विद्रोह उनकी और भी निर्देशित था। यह कम बड़ी बात नहीं है कि आर्थिक सुरक्षा एवं साहित्य अस्ति को बनाए रखने के लिए एक परिवार के कई भाइयों (सिद्धों कानतें चांद और भैरव) ने अपने प्राणों की आहुति दे दी।

सन 1857 की बगावत ने ब्रिटिश शिक्षा नीति का शिकंजा बिखोड़ दिया था। वे लंदन विश्वविद्यालय की तर्ज पर कलकत्ता, मद्रास तथा मुंबई में विश्वविद्यालय स्थापित करने के कामयाब तो हुए लेकिन प्राथमिक शिक्षा बिल्कुल ही उपेक्षित रही। विद्यालयों को अनुदान बंद कर दिया गया था। जारी नीति से मिशनरियों की शिक्षा बुरी तरह प्रभावित हुई। परिणामस्वरूप लार्ड रिन ने विलियम हंटर की अध्यक्षता में 3 फरवरी 1882 को पहला भारतीय शिक्षा आयोग गठित किया और बाद में चलकर हंटर कमीशन के रूप में लोकप्रिय हुआ। इसका मुख्य उद्देश्य वुडस डिस्पैच के परिणामों की जांच पड़ताल करना था कि भारत में प्रारंभिक शिक्षा का फैलाव कहाँ तक हो सका है तथा भविष्य में और भी विस्तारित करने के लिए और कौन से कदम उठाए जा सकते है।

1854–1882 के मध्य प्राइमरी और सेकेन्डरी शिक्षा की स्थितिः–

वर्ष	विद्यालयों की	छात्रों कीं	एजेन्सी
1854	प्राइमरी शिक्षा	36000 70000	सरकारी विद्यालय
1870–71	16, 473	70,000	विषनरी विद्यालय
1881–82	82,916	20,61,541	सरकारी और अनुदान प्राप्त वही
1854–1882	169 सेकेन्डरी शिक्षा 1,392	18,335 44,605	सरकारी स्कूल वही

मिशनरियों को सरकार द्वारा संचालित स्कूलों में कभी प्रतिस्पर्द्धा झेलनी पड़ी। जबकि सरकारी स्कूलों में धार्मिक शिक्षा नहीं दी जाती थी। प्रारंभिक शिक्षा की स्थिति खराब होने लगी क्योंकि समुचित वित्तीय संसाधनों की कमी हो रही थी। फलतः फरवरी 1882 में फर्म इंडियन एजुकेशन कमीशन बेहतर कमेटी, गठन किया गया जिसने एक वर्ष में ही अपना प्रतिवेदन 1883 में समर्पित कर दिया। हंटर कमीशन ने महसूस किया

कि मशीनरी शिक्षा को बढ़ाकर एकेडमी जरूरत चुकी है। देशी स्कूलों ने अपनी क्षमता निखारा है उन्हीं में समुचित सुधार मिल जाय। योग्य शिक्षकों की आवश्यकता महसूस की गई और उनके प्रशिक्षण के लिए नार्मल स्कूल 0000 में स्थापित करने की अनुशंसा की गई जिससे सरकार को किसी तरह का हस्तक्षेप नहीं है।

सेकेन्डरी एजुकेशनः—

सेकेन्डरी एजुकेशन से तात्पर्य मिडिल ओर हाई स्कुल की शिक्षा से है। शिक्षा क्षेत्र में कॉलेज सबसे ऊपर तथा प्राइमरी स्कूल सबसे निचले स्तर पर था। प्रारंभ में सेकेन्डरी स्कूल के अन्तर्गत अनुदानित और गैर अनुदानित हाई स्कुल, मिडिल स्कूल, मिडिल वर्नाक्यूलर स्कुल आते थे। बाद में सर्वोदय हाई (उत्तर बेसिक) 9वीं से 12वीं तक सीनियर थे। बेसिक स्कुल तथा ग्रेड ट से ग्प्प् तक सभी सेकेन्डरी स्कुल के अन्तर्गत थे। 1862 के काल में दो इंग्लिश वर्नाक्यूलर स्कुल दरभंगा में दिसम्बर 1861 में स्थापित किए गए। दरभंगा राज के कोर्ट ऑफ वार्ड जेम्स फर्लोन्डस ने इसे खोलने में दिलचस्पी ली थी। दूसरा बाढ़ में डिप्टी मजिस्ट्रेट मि. कोले और दारोगा सैयद युसुफ हसन के सहयोग से स्थापित हुआ। यह तीस रूपये मासिक खर्च पर चलाया गया। स्कूल की फीस आठ आना प्रतिमाह थी जबकि इसमें छात्रों की संख्या 72 थी।

बिहार में एजुकेशन सर्किल भागलपुर एवं पटना में स्थापित किया गया था। इस योजना के तहत एक सेन्ट्रल कॉलेज और प्रत्येक जिला हेडक्वार्टर में जिला स्कूल को स्थापित किया जाना था। फलतः पटना, आरा, छपरा, भागलपुर हिल स्कूल खोले गए। फिर देवघर के बाद में दुमका स्थानान्तरित मोतिहारी, पूर्णिया, हजारीबाग, चाइबासा में जिला स्कूल खोले गए। इन स्कूलों में शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी था लेकिन अंग्रेजी को ब्रिटिश सरकार ने जबरन नहीं लादा था।

1862 में बिहार में कुल आठ जिला स्कूल थे जिसमें छात्रों की संख्या 1736 थी। दिसम्बर 1862 में इन्ट्रेंस परीक्षा में सिर्फ छः छात्र उतीर्ण हुए। इनमें से पांच ने पटना कॉलेज में प्रथम वर्ष में नामांकन लिया। जिला स्कुल की असफलता के कई कारण थे। सरकार का इस पर वार्षिक वहन सिर्फ 3000 रूपये फलतः सिर्फ दो जिला स्कूल में यूरोपियन हेड मास्टर थे। स्थानीय स्तर पर योग्य शिक्षक नहीं थे। जिसके कारण बंगाली शिक्षकों को अंग्रेजी पढ़ाने के लिए नियुक्ति किया गया था। बिहार में अंग्रेजी में शिक्षित लोगों के लिए कोई स्थान नहीं था। स्कुल निरीक्षक एस डब्ल्यू फालेन ने भी इस पर अफसोस प्रक्ट किया था और कहा था कि केवल बंगाली ही प्रथम भारतीय थे, जो यूरोपियनों की बौद्धिक क्षमता का सामना कर सकते थे। बंगाल प्रांत में 228 नियुक्तियों में 1861—62 के दौरान 4 को अशिक्षित लोगों को देना पड़ा।

बिहार के लोग अंग्रेजी शिक्षा के प्रति उदासीन है। इस पर एस0 डब्लू फैलन विश्वास नहीं करता था। उनका मानना था कि बिहार दूसरे प्रांतों की तरह ही कार्य करने के लिए तात्पर है। इसका प्रमाण भी मिला जब 1862 अप्रैल में से छात्रों की संख्या 1085 की तुलना में 1863 में यह बढ़कर 1396 हो गई। इसका कारण यह था मुख्य अपीलीय कोर्ट में अंग्रेजी को प्रारंभ किया गया। बिहार के प्रमुख शहर में रेल के प्रारंभ होने पर अंग्रेजी की तरफ वही सम्मान बढ़ गया।

1869—70 में निजी मिडिल इंग्लिश स्कूल और अनुदानित स्कूलों की संख्या में वृद्धि हुई। छपरा हाई स्कूल ने एक उदाहरण पेश किया। वहां के निवासियों ने शिक्षकों के वेतन में वृद्धि कर दी। 8 रूपये प्रतिमाह तक वेतन शिक्षकों को नियत समय पर मिल जाता था। पटना डिविजन के हाई स्कूलों में छपरा स्कूल प्रथम स्थान पर रहा। क्योंकि इन्ट्रेस परीक्षा में तीन छात्रों ने द्वितीय श्रेणी में और एक ने तृतीय श्रेणी में सफलता पाई। लैग्वेज के माध्यम से स्कूलों के साइन्स की पढ़ाई को प्राश्रय दिया गया। 1868 में स्थापित बिहार साइन्टिफिक सोसायटी ने इस टेक्सट बुक तैयार करने में प्रशसंनीय भूमिका निभाई। 1870 के बाद सरकार द्वारा हिन्दी को भाषा का माध्यम बनाने का प्रयास किया गया। प्रारंभ में कैथी लिपि को हिन्दी के लिए लोकप्रिय बनाने का प्रयास किया गया। लेकिन बाद में देवनागरी लिपि ने कैथी लिपि का स्थान ले लिया। कायस्थ और मुस्लिमों ने बिहार के हिन्दी के प्रसार किया।

बिहार बंध (1874 में प्रारंभ) ने हिन्दी के प्रश्न को अजीकार किया। दरभंगा के महाराजा लक्ष्मीश्वर सिंह ने हिन्दी की लोकप्रियता के लिए उनके पुरस्कार अच्छी पुस्तकों के लिए प्रारंभ किया। 1880 में सरकार ने हिन्दी को कोर्ट की भाषा बना दिया है। 34 सेकेन्डरी स्कूलों में हिन्दू लड़कों को अनुपात में मुस्लिम छात्रों की संख्या में भी वृद्धि हुई। 1866 से 1870 तक के रिपोर्ट के अनुसार इंग्लिश स्कूलों में मुस्लिम छात्रों की संख्या

मुस्लिम आबादी के अनुपात में हिन्दू आबादी की तुलना में दुगुनी थी। जबकि मिडिल क्लास वर्गाक्यूलर स्कूलों में तिगुनी थी। इस असंतुलन का मुख्य कारण यह था कि मुस्लिम सरकारी सेवा के प्रति काफी सचेष्ट थे।

1825 में पटना सर्वे स्कूल के 37 छात्राों में 21 मुसलमान थे, वहीं टेक्नीकल मेडिकल स्कूल बांकीपुर के 165 छात्रों में तीन चौथाई छात्रा मुसलमान था। 19वीं सदी के सत्तर के दशक के लोगों में शिक्षा के प्रति जागृति विशेष कर सेकेन्डरी शिक्षा में आई। यद्यपि उच्च शिक्षा पर सरकारी खर्च घट गया लेकिन आप लोग शिक्षा की जरूरतों के लिए आगे आए। 1877 में जिला स्कूलों को तीन ग्रेड में बांटा गया। प्रथम श्रेणी के जिला स्कूल जिसमें 300 या उस से अधिक छात्र हो तथा स्थानीय स्तर पर आय 6360 रूपया प्रतिवर्ष हो। ऐसे स्कूल के लिए सरकारी अनुदान 2000 कर दिया गया। 1880 के में पांच सरकारी हाई स्कूलों में 400 से अधिक छात्रा थे। डायरेक्टर ऑफ पब्लिक इन्स्ट्रक्टर ने वार्षिक रिपोर्ट में लिखा था, पिछले दो तीन वर्षो में शिक्षा के क्षेत्रा में आश्चर्यजनक बदलाव आया है और बिहार में इंग्लिश एजुकेशन के प्रति अप्रत्याशित मांग बढ़ी है और यह पूरे बंगाल प्रांत में सबसे अधिक है।

जिला स्कूलों को 1881 में प्रांतीयकरण किया गया। इसके अनुसार इन स्कूलों के सभी खर्चो को प्रांतीय राजस्व में ही पूरा करना था। 1882 में हंटर कमीशन ने हाई स्कूलों को छांट दिया। पहला वैसे हाई स्कुल जहां के लड़के कॉलेजों में जेनरल शिक्षा के लिए जाते हैं और वैसे हाई स्कुल जहां के छात्रा व्यवसायिक पढाई के लिए निकलते है। 1883 में बिहार में स्कूल 292 सेकेन्डरी स्कूल थे। 1901 में पटना और भागलपुर डिवीजन में हाई स्कूल की स्थिति इस प्रकार थी।

पटना डिवीजनः–

स्कूलों का प्रकार		स्कूलों की संख्या	छात्राों की सं0	
			लड़का	लड़की
हाई स्कूल	सरकारी	7	2414	
	अनुदानित	14	2654	52
	गैर अनुदानित	22	6038	
कुल		43	11106	52
मिडिल इंग्लिश स्कूल	सरकारी	4	308	1
	अनुदानित	24	1534	
	गैर अनुदानित	13	972	1
कुल		**41**	**2814**	**2**
मिडिल वर्नाक्यूलर	सरकारी	37	1963	3
	अनुदानित	3	133	
	गैर अनुदानित	11	776	
कुल		51	2872	3

भागलपुर				
हाई स्कूल	सरकारी	5	1420	
	अनुदानित	11	1420	
	गैर अनुदानित	9	1500	
कुल		25	4072	
मिडिल इंग्लिश स्कूल	सरकारी	1	52	
	अनुदानित	21	1356	3
	गैर अनुदानित	10	489	5
कुल	32	1897	2	8

मिडिल वर्नाक्यूलर	सरकारी	24	1555	2
	अनुदानित	27	1767	50
	गैर अनुदानित	2	12	26
कुल		53	3334	78

1917–22 के दौर में सेकेन्डरी स्कूलों की संख्या में बढ़ोत्तरी हुई लेकिन छात्राों की संख्या में कमी हो गई। इसका कारण यह था कि उस समय असहयोग आन्दोलन चल रहा था 1918 में विद्यालय परित्याग प्रमाण पत्र परीक्षा प्रारंभ किया गया। विद्यालय परित्याग प्रमाण पत्र परीक्षा और मैट्रिकुलेशन परीक्षा लगभग समान थे और स्कूलों को दोनों की तैयारी के लिए कहा गया। एक विद्यार्थी के चाहने पर दोनों परीक्षा दे सकते थे। लेकिन यह काफी लोकप्रिय नहीं हो सका और एक दशक में समाप्त हो गया। सरकारी रिपोर्ट के अनुसार मैट्रिकुलेशन परीक्षा एक प्रकार से नौकरी के लिए पासपोर्ट की तरह थी। 1922–25 के बोर्ड आफ सेकेन्डरी एग्जामिनेशन का गठन किया और डायरेक्टर आफ पब्लिक एजुकेशन इसके चेयरमैन बनाए गए। इसमें 14 अन्य सदस्य थे जिसमें से 8 पटना विश्वविद्यालय सीनेट की लैग्वेस्टिक कौसिक में चुने जाते थे। परीक्षा के कुल सचिव इस बोर्ड के सचिव बनाए गए लेकिन वे इस बोर्ड के सदस्य नहीं थे।

स्कूलों के प्रकार	1912–13		1925–26		बढ़ोत्तरी	
	स्कूलों की सं.	छात्राों की सं.	स्कूलों की सं.	छात्राों की सं.	स्कूलों की सं.	छात्राों की सं.
हाई स्कुल	98	28397	137	35851	36	7454
मिडिल स्कुल	213	20251	298	29801	85	9550
मि. वर्नाक्यूलर स्कुल	144	10467	243	25042	99	14375
कुल योग	455	59115	675	90694	220	31579

निष्कर्ष

राजनीतिक उथल–पुथल के कारण हाईस्कुलों की प्रगति में व्यवधान भी आया। 1930 के सविनय आज्ञा आन्दोलन में धरना आदि कार्यक्रमों के कारण स्कूलों में छात्राों की संख्या में गिरावट आई। जबकि सेकेन्डरी स्कूलों की संख्या में वृद्धि होती रही। 1936–37 में हाई स्कूलों की संख्या बढ़कर 196 हो गई जिसमें 57043 छात्रा नामांकित थे और मिडिल इंग्लिश स्कूलों की संख्या 637 हो गई। जिसमें 85009 छात्रा नामांकित थे। स्कूलों की संख्या में वृद्धि का कारण यह था कि आर्थिक मंदी की वजह से बेरोजगारी बढ़ने लगी थी और स्कूलों में न्यूनतम वेतन पर काम करने के लिए शिक्षकों की कमी नहीं थी।

ग्रंथ सूची

1. जौहरी पाठक– भारतीय शिक्षा का इतिहास, 2013 आगरा, पृष्ठ 117
2. पदम रामचन्द्रण एवं वसंत रामकुमार–एजुकेशन इन इंडिया, 2001, पृष्ठ 72
3. सुरेश चन्द्र घोष–हिस्ट्री ऑफ एजुकेशन इन मार्डन इंडिया 1757–1986, ओरिएन्ट सांग मैन 1945, पृ08
4. रामचन्द्रन एवं रामकुमार– पूर्वोक्त, पृष्ठ 73
5. रिपोर्ट ऑफ द इंडिया एजुकेशन कमीशन, पृष्ठ 134
6. जौहरी एवं पाठक, पूर्वाक्त, पृष्ठ 130
7. राम शकल पाण्डेय–भारत में शिक्षा व्यवस्था का विकास पृष्ठ 194
8. वही, पृष्ठ 216